प्रातःक्लास 14/4/68 ओमशान्ति शिवबाबा याद है?

ओमशान्ति। मीठे–2 बच्चों को समझाया गया है यह है मृत्युलोक। इसके भेद में अमरलोक भी है। भक्ति मार्ग में गाया हुआ है पार्वती को अमरकथा सुनाई थी। अभी अमरलोक में तो तुम जाते हो। शंकर तो कथा सुनाते नहीं। कथा सुनाने वाला ज्ञान सागर एक ही बाप है। शंकर कोई ज्ञान सागर नहीं जो कथा सुनावेंगे और कथा कोई एक तो नहीं सुनानी होती है। ऐसे टॉपिक्स पर तुम बच्चों को समझाना चाहिए। काल पर कैसे जीत पहनी जाती है। यह जो नॉलेज है अमर भी बनाती है, इससे आयु भी बड़ी होती है। वहां काल होता ही नहीं। यहां तुम 5 विकारों अथवा रावण पर जीत पाने से रामराज्य अथवा अमरलोक के मालिक बनते हो। मृत्युलोक है रावण राज्य। अमरलोक में है रामराज्य। देवताओं को काल नहीं खाता। वहां काल के जमघट होते नहीं। यह तो टॉपिक्स भी कोई कम नहीं है। मनुष्य काल पर विजय कैसे पहन सकते हैं? है तो गीता अथवा ज्ञान की बात। भारत अमरलोक था। कितनी बड़ी आयु थी। उत्तर...सर्प का मिसाल भी सतयुग के लिए है। एक खल छोड़ दूसरा लेते हैं। इसको कहा जाता है बेहद का वैराग्य। जानते हैं यह सारी सृष्टि तो विनाश होने की है। यह पुराना शरीर भी छोड़ना है। यह 84 जन्मों का पुराना खल है। अमरलोक में तो ऐसे नहीं होता। वहां फिर समझेंगे अभी शरीर बड़ा हुआ। सतोप्रधान से तमोप्रधान हो गया, फिर सा. होता है। सर्प को भी नये खल का सा. होता होगा ना। समझ को सा. कहा जाता है। हमारा अभी नया तैयार हुआ है। पुराना को छोड़ना है। वहां भी ऐसे होता है। उनको कहा ही जाता है अमरलोक, जहां काल खाता। आपे ही समय पर शरीर छोड़ देते हैं। कच्छुओं का मिसाल यहां का ही है। कर्म करके फिर अंतर्मुख हो जाना है। इस समय के मिसालों को भी भक्ति मार्ग में कापी करते हैं; परन्तु सिर्फ़ कहने मात्र। समझते कुछ भी नहीं है। अभी तुम तो समझते हो। रखड़ी उत्सव, दशहरा, दीपमाला, होली आदि सभी इस समय के हैं फिर जो भक्तिमार्ग में चली आती है। यह बातें सतयुग में होती नहीं। तो यह (भी) टॉपिक अच्छी है। ...समझाने की विधि–मनुष्य काल पर जीत कैसे पहन सकते हैं? मृत्युलोक से अमरलोक कैसे जा सकते हैं? ऐसी–2 बातें समझाने के लिए लिखना चाहिए। जैसे नाटक के लिए लिखते हैं ना। आज फलाना नाटक है। तुम्हारी भी प्वाइन्ट्स सेन्टर पर नोट रखनी चाहिए। प्वाइन्ट्स की लिस्ट हो। आज इस प्वाइन्ट्स पर समझाया जावेगा। रावण राज्य से दैवी रामराज्य में कैसे जा सकते हैं? यह भी टॉपिक। समझानी तो भल एक ही है; परन्तु टॉपिक सुनने से खुश होंगे कि जाकर सुनें। बेहद के बाप से बेहद के विश्व के मालिकपने का वर्सा कैसे मिलता है आकर समझो। जैसे सन्यासियों का भी अखबार में पड़ता है ना आज 25वां यज्ञ रचा। उसमें आज यह सुनावेगा। यहां तो वह बात नहीं। बाप कहते हैं मैं तो एक ही बार यह यज्ञ रचता हूँ। कोई 50–60 यज्ञ तो नहीं रची है। एक ही यज्ञ रचता हूँ जिसमें सारी दुनियां स्वाहा हो जाती है। वह तो बहुत यज्ञ रचते हैं । जलसा आदि करते हैं। यहां तो तुम जानते हो इस सारी पुरानी सृष्टि स्वाहा हो जानी है। यह रुद्र बाबा का ज्ञान यज्ञ है। जिस यज्ञ से तुम ऐसा देवता बनते हो। नई दुनियां स्थापन हो जाती है। यह है मनुष्यों की पुरानी दुनियां। नई दुनियां में सिर्फ़ इन देवी देवताओं का ही राज्य होता है। यह भी बाप ही तुमको समझाते हैं। रचयिता बाप अपना और रचना के आदि, मध्य, अंत का ज्ञान देते हैं। राजयोग सिखाते हैं। सतयुग में हैं ही पवित्र देवी–देवताएं, राज्य भी करते हैं। इसको कहा जाता है आदि सनातन देवी–देवता धर्म। यह भी टॉपिक्स रख सकते हो। आदि सनातन सतयुगी देवी–देवता धर्म की स्थापना कैसे हो रही है आकर समझो। विश्व में शान्ति कैसे स्थापन होती है आकर समझो। परमपिता परमात्मा के सिवाय विश्व में शान्ति स्थापन करने की राय कोई दे न सके। राय देने वालेको मिडल्स प्राइज़ मिलती है। विश्व में शांति स्थापन करने का प्राइज़ कैसे और कौन देते हैं यह भी टॉपिक ऐसे विचार–सागर–मंथन कर निकालनी चाहिए। ऐसा प्रबन्ध रचो जो सभी जगह एक ही टॉपिक हो तो सभी का कनैक्शन रहेगा। ऐसी लिस्ट बना कर पहले से इशारा दे देना चाहिए। फिर वह समाचार देहली में आना चाहिए तो सभी को मालूत पड़ जा(ये)

कि सभी जगह ऐसा भाषण चला। इनको ही यूनिटी कहेंगे। सारी दुनियां में है डिस–यूनिटी। राम राज्य का तो गायन है ना। शेर और बकरी इकट्ठे जल पीते थे। त्रेता में ही ऐसा है तो सतयुग में क्या न होगा। बाकी शास्त्रों में तो अनेक कथाएं लिख दी हैं। भक्ति मार्ग में है ही कथाएं। तुम तो बाप से एक ही कथा सुनते हो। दुनियां में तो मनुष्य ढेर के ढेर कथाएं सुनाते रहते हैं। द्वापर से लेकर जो भी शास्त्र आदि चलती है वहां वह होती ही नहीं। भक्तिमार्ग के सभी बातें पूरी होती हैं। वहां स(य)ह कुछ नहीं होता। बाप कहते हैं अभी वह सभी बातें छोड़ दो। भक्तिमार्ग अभी पूरा हुआ। उनका नाम भी न लो। हियर नो ईविल, टॉक नो ईविल। कोई को देखने की भी दरकार नहीं। जो कुछ देखते हैं सभी है ईविल। रावण राज्य में सभी बन्दर ही बन्दर हैं। उनको देखते हुये, सुनते हुये न सुना, न देखो। अभी बाप जो समझाते हैं वही बुद्धि में है। हम संगमयुगी ब्राह्मण कितने ऊँच हैं। इस समय हम ईश्वरीय औलाद हैं। देवताओं से भी ऊँच हैं। धीरे–2 वृद्धि को पाते रहेंगे। इतनी सहज बात भी किसकी बुद्धि में नहीं आती। हम ईश्वरीय औलाद तो स्वर्ग़ के मालिक ज़रूर होनी(ने) चाहिए; क्योंकि वह बाप स्वर्ग़ की स्थापना करते हैं। तो हम स्वर्ग़ में क्यों नहीं हैं? करोड़ों वर्ष कह देने के कारण कोई बात याद भी नहीं रहती। बाप आकर याद दिलाते हैं। यह तो 5000 वर्ष की बा(त) है। तुम देवी–देवताएं थे। अभी फिर तुमको वही बनाते हैं। सम्मुख सुनने से कितनी खुशी, रिफ्रेशमेन्ट आ जाती है। भक्तिमार्ग में तो बहुत झूठे गपोड़े सुनाते हैं। है सभी झूठ। गायन भी है झूठी माया.....5 तत्व भी झूठी है। सभी सांवरे तमोप्रधान बन गये हैं। बच्चे जो सयाने, समझू हैं उनकी बुद्धि में आता है। बाप से वर्सा तो ज़रूर मिलता है। बाबा नई दुनिया रचते हैं तो हम ज़रूर उस दुनियां में होने चाहिए। बाप के तो सभी बच्चे हैं। सभी का धर्म, रहने का स्थान, आना–जाना भिन्न2 प्रकार से है। कैसे जाकर मूलवतन में निवास करते हैं, वह सब बुद्धि में है। मूलवतन में सिजरा है। सूक्ष्मवतन मे तो सिजरा नहीं दिखा सकते। वहां जो कुछ (दि)खाते हैं यह सभी हैं सा. की बातें। यह भी ड्रामा में नूँध है। तुम सूक्ष्मवतन में रहते हो। वहां मूवी चलता है। बीच में मूवी का भी ड्रामा बना था। फिर टॉकी बना है। सायलेन्स का तो ड्रामा बन न सके। बच्चे जानते हैं हम सायलेन्स में कैसे रहते हैं। जैसे वहां आत्माओं का सिजरा है वैसे यहां मनुष्यों का भी है। यह तो ऐसी–2 प्वाइन्ट्स बुद्धि में रख तुम समझा सकते हो। फिर भी पढ़ाई में कितना टाइम लगता है। करके यह भी समझ जाये; परन्तु याद की यात्रा कहां से धारण हो और खुशी हो। तुम अभी यर्थात् रीति योग सीख रहे हो। बच्चों को समझाया है भाई–2 देखो। आत्मा का तख़्त तो यह है; इसलिए भागीरथ बाप का सिंहासन भी मशहूर है। जब किसको समझाते हैं तो ऐसे समझो हम भाईयों को समझाते हैं। दृष्टि ऐसी रहे। इसमें ही बड़ी भारी मेहनत है। मेहनत से ही ऊँच पद मिलता है। बाप भी ऐसे ही देखेंगे। बाप की नज़र भृकुटि के बीच में ही जावेगी। आत्मा तो छोटी बिन्दी है। सुनती भी वह है। तुम बाप को भृकुटि के बीच में ही देखेंगे। बाबा भी यहां है तो भाई (साकार की आत्मा) भी यहां है। इस भाई का रथ बाप ने लिया है। ऐसे बुद्धि रहने से तुम भी जैसे ज्ञान सागर के बच्चे सागर बन जाते हो। तुम्हारे लिए तो सहज है। गृहस्थ व्यवहार में रहने वालों लिए यह अवस्था ज़रा।.....सुन कर घर चले जाते हैं। वहां का वातवरण ही और होता है। है भी सहज युक्ति। बहुत सहज बतलाते हैं। अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो। यह भी पढ़ाई है। इस दृष्टि से देखो तो नाम–रूप है नहीं। फिर सभी बातों से हट जावेंगे। कर्मबन्धनों से अतीत हो जावेंगे। शरीर भी भूल जाता है। सिर्फ बाप ही याद रहता है। इसमें मेहनत करते रहेंगे तब ही पास विद ऑनर होंगे। इसमें ही बहुत मेहनत है। भाई–2 पक्का समझाना है। ऐसी अवस्था में बिरले कोई रहते हैं। विश्व के मालिक भी तो वही बनते हैं। आठ रत्नों की माला है ना। तो पुरुषार्थ करना है। ऊँच पद पाने वाले कैसे करके पुरुषार्थ ज़रूर करते होंगे। इसमें दूसरी कुछ भी बातें निकलती नहीं। भाई–2 का स्नेह, सम्बन्ध हो जाता है। दृष्टि वह जम जाती है।

इसमें बहुत मेहनत है; इसलिए बाबा कहते हैं बहुत गुह्य बातें सुनाता हूँ। इसमें अभ्यास करना मेहनत का काम है। यहां तुम बैठते हो तो भी भाईयों को देखो। आत्मा ही सुनती है। सुनने वाले को तुम देखते हो। मनुष्य तो कह देते आत्मा निर्लेप है। बाकी क्या? शरीर सुनता है क्या? यह तो राँग हो गया। यह है गुह्य–2 बड़ी डिफिकल्ट बातें। पुरुषार्थ करके देखो, ऐसे हैं ना। मेहनत तो करनी ही है। जो कल्प पहले बने थे वह मेहनत ज़रूर करेंगे। अपना अनुभव भी सुनावेंगे। ऐसे हम सुनता सुनाता हूँ। टेव पड़ गई है। आत्मा बिगर शरीर को बुद्धि में लाता नहीं हूँ। आत्मा–आत्मा को सुनाती है मनमनाभव। यह उनको वह उनको कहते हैं मनमनाभव। अर्थात् बाप को याद करो। यह है गुप्त बात। जैसे पढ़ाई में झाड़ के नीचे जाकर बैठ पढ़ते हैं ना। वह तो स्थूल बात हो गई। यह प्रैक्टिस डालनी है एकान्त से अपन को आत्मा निश्चय कर बैठना। देखो देहअभिमान आता है फिर प्रैक्टिस करो। दिन–प्रतिदिन तुम्हारी प्रैक्टिस बढ़ती जावेगी। नई–2 बातें तुम सुनते हो। जो तुम अभी सुनते हो। फिर नये–2 भी आकर नई–2 बातें सुनेंगे। कोई कहे हम देरी से आये हैं। अरे, तुम तो और ही फर्स्ट क्लास गुह्य–2 बातें सुनते हो। जो पुरुषार्थ करने से ही ऊँच पद मिलता है। और ही अच्छा है। माया तो पिछाड़ी तक छोड़ती नहीं। माया की लड़ाई चलती रहेगी। जब तक तुम जीत पहनो। फिर अनायास ही चले जावेंगे। जो जितना याद करेंगे समझेंगे हम जाते हैं बाप के पास। शरीर छोड़ते हैं। बाबा ने देखा है ऐसे ब्रह्म लीन होने वाले कोई–2 जाते हैं। फिर सन्नाटा हो जाता है। बाबा का देखा हुआ है। ऐसे–2 पुरुषार्थी भी होती है। काशी करवट भी बहुतों ने खाया। भक्ति मार्ग में जो जिस भावना में रहते हैं ऐसा पुरुषार्थ करते रहते हैं। बाकी मोक्ष को तो कोई पाता नहीं। न वापस ही जाते हैं। ताकि यह सभी एक्टर्स चाहिए ना। सभी आ जावेंगे। एक भी न रहेंगे। (एक गोप को सी ऑफ करने कोई जाते थे) हद–बेहद–देखना है।–विनाश के समय कोई सी ऑफ थोड़े ही करेंगे। सभी जाने वाले हैं। वापस जाना ही है। जो भी मनुष्य मात्र हैं सभी चले जावेंगे। बाकी थोड़े ही बचेंगे वह कहेंगे हम सभी को सी ऑफ किया। इस समय तुम बच्चे जानते हो सतयुग की स्थापना हो रही है। कितने करोड़ मनुष्य हैं। सभी को हम सी ऑफ करके अपनी राजधानी में चले जावेंगे। वह लोग तो करके 40–50 को सी ऑफ करते होंगे। तुम कितने को सी ऑफ करेंगे। सभी आत्माएं मच्छरों सदृश्य चली जावेंगी। तुम आये हो साथ ले जाने और भेजने लिए। तुम्हारी बात ही वण्डरफुल है। इतने करोड़ मनुष्य जावेंगे उनको हम सी ऑफ करेंगे। सभी वापस मूलवतन चले जावेंगे। यह भी तुम्हारी ही बुद्धि काम करती है। आस्ते–2 सिजरा पूरा हो जावेगा। फिर रुण्डमाला रुद्रमाला बन जावेगी। यह बातें तुम्हारी बुद्धि में ही है। रुद्र माला सो रुण्डमाला कैसे बनती है। कितनी नॉलेज है। तुम्हारे में भी जो शुरूढ़ बुद्धि है वह ही समझ सकते हैं। यह बुद्धि में याद रखने की बातें हैं। अनेक प्रकार से बाप समझाते हैं याद करने लिए। हम रुद्रमाला में जाकर फिर रुण्डमाला में जावेंगे। फिर नम्बरवार आते रहेंगे। कितनी बड़ी रुद्रमाला बनती है। इस ज्ञान को कोई भी नहीं जानते हैं। शुरू से लेकर ल.ना. से लेकर इस ज्ञान को नहीं जानते हैं। संगमयुगी ब्राह्मण ही जानते हैं। इस पुरुषोत्तम संगमयुग को याद करो। तो सारी नॉलेज बुद्धि में आ जावेगी। तुम हो जैसे लाइट हाऊस। सभी को ठिकाने लगाने वाले। तुम कैसे लाइट हाऊस बनते हो। ऐसी कोई बात नहीं जो तुम से लागू नहीं होती है। तुम सर्जन भी हो। तुम सर्जन भी हो, सर्राफ भी हो। धोबी भी हो। सभी खासियतें तुम्हारे में आ जाते हैं। महिमा भी तुम्हारी हो जाती है ; परन्तु नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। जैसे कर्तव्य करते हो ऐसा गायन होता है। बाप तो डायरैक्शन देते हैं। उस पर विचार करना सेमीनार करना तुम बच्चों का काम है। भविष्य–बाबा कोई मना नहीं करते हैं। अच्छा, बहुत सुनाने से क्या फायदा। बाप कहते हैं मनमनाभव। दिन–प्रतिदिन कम हो जाता जावेगा। अच्छा, मीठे–2 रूहानी सिकीलधे बच्चों को रूहानी बापदादा का याद प्यार गुडमॉर्निंग। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।